

२३०

मरु-गुर्जर जैन साहित्य का बृहद् इतिहास

“अहे नइ हरिमइ आराहीउ, नवि जागु सिवराति,
गोरी कण्ठ न ऊतरि, माहरी उत्तम जाति।”

एक जैन कवि का उत्तम जाति के प्रति यह भाव भी उल्लेखनीय है।
रचना के अन्त में कवि का नाम है किन्तु रचना काल आदि से सम्बन्धित
अन्य विवरण नहीं है, यथा—

‘अहे वसन्त क्रीडा तीह अति करि, आणंद मुनिनी पूरि।
मन रंगि एम बोलि, श्री गुणचन्द्र सूरि।१६।’

इस फागु का प्रारम्भ निम्नलिखित दोहे से हुआ है :—

अहे फागुण फली अ बीजोरडी, पुहतलु मास बसन्त।
बनि बनि तरुअर कूपला, केसू कसम अनन्त।१।

यह फागु काव्यत्व की दृष्टि से एक सरस रचना है और उद्दाम यौवन
के रस को उच्छलित करने वाले काव्य-प्रकार फागु के अनुरूप है। इसकी
भाषा पर गुर्जर का प्रभाव मरु की अपेक्षा अधिक है। सब कुल मिलाकर
यह मरुगुर्जर का एक सरस जैन काव्य है।

गुणरत्न सूरि - आप नायल गच्छीय गुणसमुद्र सूरि के प्रशिष्य और
गुणदेव सूरि के शिष्य थे। आपने इसी शताब्दी में ‘ऋषभ रास’ और
‘भरत बाहुबलि पवाडा’ नामक दो रचनाएँ कीं। ऋषभ रास में ऋषभदेव
का पावन चरित्र चित्रित है। इसका प्रारम्भ निम्न पंक्तियों से हुआ है :—

‘आदि अक्षर ॐकारसिउं, अरिहंस पणम्योसु
रासबंध रिसहेसनु नव नव रस वन्नेसु।
नायलगच्छ गुणदेव गुरु, पामी सुगुरुपसाऊ,
गुण रयण सूरि इमि ऊचरी वन्नसु वनिताराउ।
वंश इखागह हूँ तविमु, आणी अति घण भत्ति।
गुणतां गण गिरुयडि चडि, सरसत्ति आपु मत्ति।’^१

इसकी अन्तिम पंक्तियाँ देखिये :—

‘केवल दीपक त्रिभुवन भाण, समोसरण मांहि करि बषाण।
गुणरत्न सूरि स्वामी जयवंत, प्रथम प्रबन्ध ऋषभ जयवन्त।१४३।
इति ऋषभ चरिते प्रथम प्रबन्ध।’

१. श्री मो० द० देसाई—जी० गु० क० भाग १ पृ० ३०

मरु-गुर्जर जैन साहित्य

२३१

‘भरत बाहुबलि पवाडा’ के अन्त में ‘इति श्री भरथ बाहुबलि सम्बन्धे द्वितीयो प्रबन्ध’ लिखकर यह शंका उत्पन्न कर दी है कि ये दोनों एक ही रचना के दो भाग हैं या दोनों दो स्वतन्त्र प्रबन्ध ग्रंथ हैं? ‘पवाडा’ का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है :—

“पढम जिणेसर पाय नमु नित, सेत्रुञ्ज केरो स्वामि,
अहदिस आदित नाम जपनां, दुरगति नासि नाम ।”

यह अडताल चौपड़ छन्द है, इसे लेखक ने ‘पवाड़ा’ कहा है, यथा—

“आदि कूअरि करुं वीनती, ब्राह्मी अम वर दीजि,
भरथ बाहुबलि तणो पवाडो, तुझ पसामि कीजि ।५।”

इस पवाडे के अन्त की पंक्तियाँ आगे उद्धृत की जा रही हैं :—

‘अे जपंता अंगि पाप न लागि, अविहउ सुख अनन्त ।

श्री गुणरत्न सूरि इमं बोलि, श्री आदिनाथ जयवंत ।३९७ ।”

अपने नाम के अनुरूप यह एक विस्तृत पवाडा है और प्रबन्ध काव्य की मान्यताओं के करीब है। इस पवाडे में जैन संसार की सुपरिचित भरत और बाहुबलि की कथा का आख्यान किया गया है। इसकी भाषा स्वाभाविक और सरल मरुगुर्जर है। यह रचना १५ वीं शताब्दी की है। इस सम्बन्ध में श्री देसाईजी ने कई आधार दिए हैं इनमें प्रमुख आधार यह है कि इनके गुरु गुणसमुद्र सूरि ने सं० १४९२ में पंचतीर्थ के बिम्ब की प्रतिष्ठा कराई थी। अतः इसे १५वीं शती की रचना मानना युक्तियुक्त लगता है।

चाँप-चंप—आपने सं० १४४५ में भट्टारक देवसुन्दर सूरि रास लिखा। इसमें उक्त सूरिजी का चरित्र ५५ पद्यों में लिखा गया है। यह रचना अभी अप्रकाशित है। इसकी प्रति श्री नाहटाजी के संग्रह में है।^१ चंप कवि कृत नलचरित्र या ‘नल दवदंती रास’^२ भी १५वीं शताब्दी की रचना है, इसलिए यह अधिक सम्भव है कि दोनों - चाँप और चंप—एक ही कवि हों। नलचरित्र की प्रति खण्डित है अतः रचना सम्बन्धी अधिक विवरण नहीं प्राप्त है। यह सं० १४९८ के आसपास की रचना कही गई है। इसका प्रथम पद्य इस प्रकार है—

१. श्री अ० च० नाहटा ‘राजस्थानी साहित्य का आदिकाल’ परम्परा’
विशेषांक पृ० १८१ सं० श्री नारायण सिंह भाटी

२. श्री मो० द० देसाई ‘जैन गुण क०’ भाग ३ पृ० ४३४-४३५